8. सुमित्रानंदन पंत

कवि परिचय

पंत जी प्रकृति की क्रोड़ में पलने वाले अत्यंत सुकुमार कवि हैं। नवीन युग में प्रवाहित प्रमुख प्रवृत्तियों एवं विचार धाराओं की रूप रेखाएँ स्पष्ट या अस्पष्ट स्वरूप में उनके काव्य में मिल जाएँगी। प्रकृति निरीक्षण से उन्हें कविता की प्रेरणा मिली। उनकी जन्म भूमि कूर्मांचल प्रदेश की सौंदर्यात्मक अनुभूति ने उनकी सारी भावनाओं को रंग दिया। 'वीणा' से 'ग्राम्या' तक की सभी रचनाओं में यह विशेषता किसी न किसी रूप में वर्तमान है; पंत जी के भीतर विश्व और जीवन के प्रति एक गंभीर आश्चर्य की भावना भी इसी कारण आ गई। उनकी कल्पना जन–भीरु हो गई। प्रकृति को उन्होंने सदैव ही सजीव सत्ता रखने वाली नारी के रूप में देखा है। 'वीणा' और 'पल्लव' उनकी समस्त रचनाओं में विशेषतः प्राकृतिक साहचर्य–काल की कृतियाँ हैं। भारतीय दर्शन से प्रभावित होकर वे 'पल्लव' से 'गुंजन' में सुन्दरम् से शिवम् की ओर अधिक झुक गए। 'गुंजन' तथा 'ज्योत्स्ना' में कल्पना अधिक सूक्ष्म तथा भावात्मक हो गए।

छायावादी कवियों में पंत जी ऐसे कवि हैं जिन पर पाश्चात्य प्रभाव बहुत अंश तक पड़ा। वर्डस्वर्थ, कीट्स, शेली तथा टेनिसन आदि अंग्रेजी के कवि तथा रवींद्र इन सबके प्रभाव को उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है। 'युगान्त', 'युगवाणी' तथा 'ग्राम्या' इन तीनों में उनकी विचारधारा का मोड़ नामकरण से ही प्रतीत होता है। जीवन की समस्याओं के प्रति जागरूक होकर जो कविताएँ उनकी लेखनी से उद्धृत हुईं वे सब इन संग्रहों में संकलित हैं।

पंत जी की भाषा में कोमलता है। उसमें कलात्मकता का आग्रह न होने पर भी सौंदर्य है। शब्द–ध्वनि की परख उन्हें चित्रों में झंकार उत्पन्न करने में सदा सहायता देती रहती है। खड़ी बोली को वे ब्रजभाषा की–सी मधुरता अपने शब्द चयन की सजगता द्वारा प्रदान करते हैं। विचार पक्ष को वे कलापक्ष से अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं इसी कारण वे इस शब्द कौशल की ओर आगे चलकर अधिक ध्यान न दे सके।

पाठ परिचय

प्रस्तुत तीन कविताओं में प्रथम कविता में कवि बादलों से पृथ्वी पर बरसने की प्रार्थना करता है। वर्षा का जल भूमि में प्राणों का संचार कर देता है। वह नव जीवन का संदेश देता है। बारिश से धरती उपजाऊ होती है। यह वृक्षों, पत्तों और तिनकों में नई स्फूर्ति पैदा कर देता है। प्राणों को हर्षित करने वाला जल अमर धन के समान है। कवि प्रार्थना करते हुए कहता है कि हे जलद! तुम दिशा–दिशाओं में और सारे संसार पर बरसो।

द्वितीय कविता में कवि ने संध्या काल का मनोहारी वर्णन किया है। यहाँ संध्या को सुंदरी बताया है। संध्याकाल की सुषमा एवं लालिमा का सुंदर वर्णन प्रस्तुत किया गया है। आकाश से उतरने वाली संध्या से वातावरण सुनहला हो जाता है। वातावरण में एक मीठा मौन व्याप्त है। संध्या को सुंदरी की उपमा देते हुए कवि कहता है कि संध्या भावों में भर कर मौन है। कवि पूछता है कि तुम दिन भर कहाँ रहती हो ? संध्या रूपी सुंदरी के गाल लाल–लाल हो रहे हैं।

'द्रुत झरो' कविता में कवि प्राचीन सड़ी–गली परंपराओं के नष्ट होने की बात करता है। कवि नव युग चाहता है जहाँ अंधविश्वास और वैमनस्य से रहित संसार हो। कवि चाहता है कि पुराने पत्ते शीघ्र गिर जाएँ और नए पत्ते आ जाएँ। निष्प्राण पुराना युग जाए और आशापूर्ण नव युग आ जाए। जीवन में फिर से नई हरियाली आए। कवि आशा करता है कि विश्व में वापस चेतना आएगी और फिर से नवयुग की प्याली भरेगी।

•••

प्रार्थना

जग के उर्वर आँगन में,
बरसो ज्योतिर्मय जीवन।
बरसो लघु लघु तृण तरु पर,
हे चिर–अव्यय चिर–नूतन!
बरसो कुसुमों के मधुवन,
प्राणों के अमर प्रणय धन,
स्मिति स्वप्न अधर पलकों में,
उर अंगों में सुख यौवन।
छू–छू जग के मृत रजकण
कर दो तृण तरु में चेतन,
मृन्मरण बाँध दो जग का,
दे प्राणो का आलिंगन!
बरसो सुख बन सुखमा बन,
बरसो जग–जीवन के घन!
दिशि–दिशि में औ पल–पल में
बरसो संसृति के सावन!

सन्ध्या

कौन, तुम रूपसि कौन ?
व्योम से उतर रही चुपचाप,
छिपी निज छाया छवि में आप,
सुनहला फैला केश–कलाप,
मधुर, मंथर मृदु, मौन!
मूँद अधरों में मधुपालाप,
पलक में निमिष, पदों में चाप,
भाव संकुल बंकिम भ्रू–चाप,

मौन केवल तुम मौन!
ग्रीव तिर्यक्, चम्पक द्युति गात,
नयन मुकुलित नतमुख जलजात,
देह छबि छाया में दिन रात,
कहाँ रहती तुम कौन ?
अनिल पुलकित स्वर्णाचल लोल,
मधुर नूपुर–ध्वनि खग–कुल रोल,
सीप से जलदों के पर खोल,
उड़ रही नभ में मौन!
लाज से अरुण–अरुण सुकपोल,
मदिर अधरों की सुरा अमोल–
बने पावस घन स्वर्ण–हिंडोल,
कहो एकाकिनि कौन ?
मधुर, मंथर तुम मौन।

द्रुत झरो

द्रुत झरो जगत के जीर्णपत्र
हे स्रस्त ध्वस्त! हे शुष्क शीर्ण!
हिमताप पीत, मधुवात भीत
तुम वीत राग जड़ पुराचीन!!
निष्प्राण विगत युग! मृत विहंग!
जग नीड़ शब्द और श्वासहीन
च्युत अस्त व्यस्त पंखों से तुम,
झर–झर अनन्त में हो विलीन!
कंकाल जाल जग में फैले
फिर नवल रुधिर–पल्लव लाली!
प्राणों के मर्मर से मुखरित
जीवन की मांसल हरियाली!
मंजरित विश्व में यौवन के
जगकर जग का पिक, मतवाली
निज अमर प्रणय स्वर मदिरा से
भर दे फिर नवयुग की प्याली।

शब्दार्थ –

उर्वर–उपजाऊ/ तरु–वृक्ष/ अव्यय–व्यय न होने वाला, विकार रहित/ उर–हृदय/ मृन्मरण–मृत्यु का मरण/ संस्सृति–संसार/ रूपसि–सुंदर स्त्री/ व्योम–आकाश/ छवि –आकृति/ केश–कलाप–केश विन्यास/ मर्मर–पत्तों की खड़कन/ मंजरित–पुष्पित/ मंथर–धीरे/ अधर–होठ/ बंकिम–टेढ़ा/ मदिर–नशीला/ तिर्यक्–तिरछा/ गात–शरीर/ द्रुत–शीघ्र/ जीर्ण–पुराने, जर्जर / स्रस्त–गिरा हुआ/ पीत–पीला/ वीतराग–सांसारिक वस्तुओं के प्रति आसक्ति रहित/ पुराचीन–प्राचीन/ विहंग–पक्षी/ च्युत–भ्रष्ट, अलग/ रुधिर पल्लव–रक्त वर्ण की कोंपलें।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आँगन को उर्वर कौन करता है ?

   (क) खाद (ख) केंचुए

   (ग) वर्षा का जल (घ) किसान ( )

2. कवि ने संध्या की तुलना किससे की है ?

   (क) सुंदर स्त्री से (ख) सुंदर पुरुष से

   (ग) लालिमा से (घ) नुपुर–ध्वनि से ( )

   उत्तरमाला–(1) ग (2) क

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. भूमि को उर्वर कौन बनाता है ?
2. व्योम से चुपचाप कौन उतर रही है ?
3. लज्जा से किसके गाल लाल–लाल हो रहे हैं ?
4. श्वासहीन कौन–सा युग है ?
5. मतवाली कौन है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. कवि का जगत के जीर्णपत्र के क्या अभिप्राय है ?
2. विगत युग को निष्प्राण क्यों कहा गया है ?
3. जीवन में मांसल हरियाली कब आएगी ?
4. कवि प्याली को किससे भरने की बात कहता है ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. कवि ने बादलों से क्या प्रार्थना की है ?
2. पठित कविता के आधार पर संध्या का वर्णन कीजिए।
3. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

   (क) द्रुत झरो जगत.....पुराचीन!!

   (ख) अनिल पुलकित.....नभ में मौन!

•••

यह भी जानें

संयुक्त क्रिया पद

संयुक्त क्रिया पदों में सभी अंगीभूत क्रियाएँ पृथक्–पृथक् लिखी जाएँ। जैसे– पढ़ा करता है, आ सकता है, जाया करता है, खाया करता है, जा सकता है, कर सकता है, किया करता था, पढ़ा करता था, खेला करेगा, बढ़ते चले जा रहे हैं आदि।